B.A. Hon
III paper
14.12

चन्द्रगुप्त प्रथम के सिक्के (राजा-रानी प्रकार)

## COINS OF CHANDRA Gupta I

सोने के सिक्के प्रचलित करनेवालों में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम का नाम लिया जाता है। चन्द्रगुप्त प्रथम ने जो सिक्का प्रचलित किया वह राजा-रानी के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार के सिक्के उत्तर प्रदेश के मथुरा, टांडा, अयोध्या, लखनऊ, बनारस तथा भरतपुर स्टेट के बयाना होर्ड में उपलब्ध हुए हैं। चन्द्रगुप्त प्रथम के इस प्रकार जो सिक्के ब्रिटिश संग्रहालय तथा लखनऊ संग्रहालय में अभी भी सुरक्षित हैं जिनकी तौल 120 ग्रेन है।

इस मुद्रा के अग्रभाग में राजा और रानी आमने-सामने खड़े अंकित हैं। राजा मोतियों से विभूषित, लम्बी झुकाली कोट, पायजामा और टोपी पहने हुए तथा अन्य आभूषणों से अलंकृत है। राजा के कर्णकुण्डल, हार और हाथों में कड़ा भी शोभनीय है। उसके वामहस्त में ध्वज है। रानी साड़ी, ओढ़नी तथा शिरोवस्त्र पहने हुए प्रभामण्डल से युक्त राजा के सम्मुख खड़ी है। दाहिने हाथ से राजा रानी को कुछ भेंट कर रहा है। विभिन्न मुद्राओं में अलग-अलग भेंट की वस्तु दिखाई देती है। यह उपहार किन्हीं मुद्राओं में अंगूठी कहीं सिंदूरदानी और कहीं कङ्गन लग रहा है। रानी का दाहिनी हाथ कमर पर है और वामहस्त नीचे लटक रहा है। मुद्रा के बायीं ओर चन्द्रगुप्त और दायीं ओर "श्री कुमार देवी" या "कुमार देवी श्री" लिखा हुआ है।

पृष्ठ भाग में सिंह वाहिनी दुर्गा की आकृति बनी है जो चोली तथा साड़ी पहने, चादर ओढ़े, हार तथा टीका से युक्त तथा दाहिनी हाथ में पाश, बायें हाथ में कार्नकोपिया और पैरों तले मणियों से आभूषित चटाई से सुशोभित प्रदर्शित है। हाथ में नालयुक्त कमल सुशोभित है। पैरों के नीचे भी कमल बना दिखाई देता है। उसके नीचे "लिच्छवयः" लिखा हुआ है। अल्टेकर के अनुसार यह असम्भव नहीं कि दुर्गा लिच्छवि वंश की संरक्षिका देवी रही हो। जिसके कारण ही उनका चित्र इन मुद्राओं पर अंकित किया गया हो।

Scanned with CamScanner

'लिच्छवयः' शब्द से यह स्पष्ट उस लिच्छवि लिया जा सकता है कि मुद्राओं पर उस लिच्छवि गणराज्य द्वारा जारी की गई होगी जिसकी स्वतंत्रता गणराज्य द्वारा जारी की गई होगी जिसकी स्वतंत्रता लिच्छवि राजकुमारी- गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम तथा लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी के वैवाहिक सम्बन्ध के पश्चात भी अक्षर रूप से बनी रही। यद्यपि लिच्छवि गणराज्य सम्भवतः गुप्त साम्राज्य का ही एक भाग बन गया पर उससे उसकी स्थानीय सम्प्रभुता एवं स्वतंत्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और वह अपनी मुद्रायें प्रचलित करता सकता था।

"लिच्छवयः" शब्द के आधार पर विद्वानों ने प्रथम चन्द्रगुप्त का विवाह सम्बन्ध लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से माना है। इस विवाह का क्या कारण था, यह विवादास्पद है। क्या लिच्छवि लिच्छवि लोगों ने महाराजाधिराज प्रथम चन्द्रगुप्त को योग्य तथा यशस्वी राजा समझकर अपनी वंशजा से इसकी शादी की थी अथवा किसी युद्ध में सन्धि के फल स्वरूप।

कीलहार्न का मत है कि लिच्छवि लोगों का सम्बन्ध पाटलिपुत्र से भी था। कुमारदेवी के पश्चात प्रथम चन्द्रगुप्त ने अपने सम्बन्धी लिच्छवियों से मगध का राज्य पाया। जान एलन इस विचार से सहमत नहीं है। उनका कथन है कि पाटलिपुत्र तो पहले ही गुप्तों के शासन में था जहाँ पर सर्वप्रथम गुप्त राजा "गुप्त" शासन करता रहा। प्रथम चन्द्रगुप्त ने सम्भवतः वैशाली पर आक्रमण करके लिच्छवियों को पराजित किया जिसके फलस्वरूप कुमारदेवी का विवाह चन्द्रगुप्त से हो गया।

डा० विन्सेंट स्मिथ का मत है कि कुमारदेवी विवाह में दहेज स्वरूप लिच्छवि साम्राज्य का बहुत सा भाग भी लाई जिससे गुप्तवंश का राज्य निकटवर्ती प्रदेशों पर हो गया। डा० स्मिथ इस विवाह का महत्व निम्न शब्दों में व्यक्त करते हैं — "सम्भव है कि इस भाग्यशाली संयोग के समय लिच्छवि वंश प्राचीन राजनगर का स्वामी था और इस विवाह के द्वारा अपनी पत्नी के सम्बन्धियों की शक्ति का चन्द्रगुप्त उत्तराधिकारी बना।"

Scanned with CamScanner

यह निश्चित है कि लिच्छवियों के साथ अपने सम्बन्ध के कारण चन्द्रगुप्त अपने पिता और दादा की साधारण स्थानीय शासक से उठकर इतना शक्तिशाली और गौरवशाली हो गया कि उसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण कर ली जो प्रायः स्वतंत्र शासक के लिए प्रयुक्त की जाती थी। उसने अपने तथा अपनी पत्नी के और लिच्छवियों के नाम से अंकित संयुक्त मुद्रा चलाई जिसकी तौल रोमन तौल के बराबर थी और उसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी ने अपने आप को अधिकतर "लिच्छवि-दौहित्र" सम्बोधित किया।

श्री एलन के अनुसार → यदि चन्द्रगुप्त कुमारदेवी वाले सिक्के को प्रथम चन्द्रगुप्त द्वारा प्रचलित मुद्रा माना जाय तो यह समझना कठिन हो जाएगा कि गुप्त टकसाल वालों ने इस प्रकार की मुद्राओं पर दिखाई देने वाली अभिनवता तथा कलात्मकता क्यों छोड़ दी और समुद्रगुप्त के ध्वजधारी सिक्के निकालने के समय फिर क्यों कुषाण मुद्राओं का काफी अनुकरण किया गया। राजा-रानी प्रकार के सिक्के, जिनपर चन्द्रगुप्त तथा कुमारदेवी का नाम उत्कीर्ण है, प्रथम चन्द्रगुप्त के शासन-काल में ही प्रचलित किए गये गए थे। यह कहना आधाररहित होगा कि समुद्रगुप्त ने माता-पिता के स्मरणार्थ वे सिक्के निकाले थे। यदि ऐसा होता तो उनका नाम या विरुद्ध पुरोभाग या पृष्ठभाग पर अवश्य उत्कीर्ण हुआ मिल जाता।

//